व्यवसायी बनने के योग- कारक ग्रहों का योगदान

प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय, प्रोफेसर ज्योतिष विभाग, मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़, राजस्थान
सुशील अग्रवाल, शोधार्थी, मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

जीविका-यापन के दो मुख्य स्रोत हैं- व्यवसाय और नौकरी। व्यवसाय में अधीनता का भाव नहीं होता इसीलिए अच्छे-अच्छे पदों पर आसीन व्यक्तियों के मन में भी व्यवसायी बनने की प्रबल इच्छा होती है, परन्तु जाँचे-परखे ज्योतिषीय सूत्रों की कमी के कारण उनका उचित मार्गदर्शन नहीं हो पाता। ज्योतिषीय सूत्रों की कमी का मुख्य कारण यह है कि प्राचीन समय में इनकी आवश्यकता ही नहीं थी क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने पारिवारिक आजीविका उपार्जन-साधन का निर्वहन करने के लिए बाध्य था। ज्योतिषीय साहित्य में इसी अभाव के निराकरण हेतु 'व्यवसायी बनने के योग' विषय पर शोध किया जा रहा है। अभी तक पूर्ण हुई शोध-प्रक्रिया के उत्साहवर्धक परिणाम प्राप्त हुए हैं जिनका प्रस्तुतिकरण इस शोध-लेख में किया जा रहा है।

प्रमेय - साहित्यिक सर्वेक्षण और आधुनिक पुस्तकों रू1-13, के आधार पर भाव-स्थिति, राशि-स्थिति और ग्रहों की परस्पर स्थितियों के मुख्य प्रमेय निम्नलिखित हैं :

- जन्म लग्न में, दशम भाव में या एकादश भाव में यदि तुला राशि हो तो जातक व्यापार में लीन होता है।
- दशम भाव में चर राशि होने से जातक निजी व्यापार द्वारा लाभ पाता है।
- एकादश भाव में बुध की राशि हो तो जातक को अनेक प्रकार से धन लाभ होता है।
- एकादश भाव में बुध हो तो जातक को अनेक प्रकार से धन लाभ होता है।
- बुध यदि तुला राशि में हो तो जातक अनेक दिशाओं में व्यापार करने का इच्छुक होता है।
- बुध यदि दशम भाव से हो तो जातक व्यापार बुद्धि वाला होता है।
- सूर्य यदि अपनी उच्च राशि, स्वराशि या अपनी मूल-त्रिकोण राशि में हो तो जातक अपने बाहुबल से धनार्जन करता है।
- सूर्य यदि लग्न से दसवें भाव में हो तो जातक को अनेक उद्योगों से धन लाभ होता है।
- चन्द्र यदि मिथुन राशि में या तुला राशि में हो तो जातक खरीद-फरोख्त में होशियार होता है।
- दशम भाव में शुक्र या शनि हों तो जातक व्यापारी होता है।
- लग्न से बृहस्पति यदि दसवें भाव में हो तो जातक को अनेक व्यापार से धन लाभ होता है।
- चन्द्र-बृहस्पति या चन्द्र-शुक्र यदि परस्पर द्वि-द्वादश हों तो जातक स्वतंत्र व्यवसाय करता है।
- बृहस्पति और शनि यदि सप्तम भाव में हो तो जातक साझेदारी के कार्य अथवा वस्तुओं के क्रय-विक्रय से आजीविका कमाता है।
- शुक्र यदि नवम भाव में हो तो जातक अपने भुजबल से धन-सुख उपार्जन करने वाला होता है।
- शुक्र यदि एकादश या द्वितीय भाव में हो और तृतीय भाव बलवान हो तो जातक व्यापार में सफलता पाता है।
- दशम भाव में अनेक ग्रहों की स्थिति हो तो जातक व्यापारी होता है।
- चन्द्र-बुध या चन्द्र-शुक्र या मंगल-बुध की युति हो तो जातक व्यापारी होता है।

आँकड़े और परिणाम

सभी व्यवसायियों या नौकरीपेशा जातकों का कोई एकल संग्रह नहीं होता इसीलिए इस शोध में असम्भाव्यता निदर्शन विधि अपनाई गयी है। इस शोध में 595 व्यवसायियों की और 510 नौकरीपेशा जातकों की कुंडलियाँ का उपरोक्त वर्णित प्रमेयों पर आकलन के साथसाथ व्यापकता के दृष्टिकोण से सभी राशियों की सभी भाव स्थितियों का, सभी ग्रहों की सभी राशि स्थितियों का, सभी ग्रहों की परस्पर स्थितियों का और लग्न एवं ग्रहों की नक्षत्र स्थितियों का आकलन भी किया गया है जिससे नवीन सूत्र प्राप्त होने की सम्भावना भी रहे। आकलन की सुविधा के लिए सभी प्रमेयों को भाव, राशि, ग्रहों की परस्पर स्थिति और युति आदि के आधार पर वर्गीकरण किया गया है। आकलन के निम्न परिणाम प्राप्त हुए :

राशि-स्थिति पर आधारित परिणाम

- लग्न में मिथुन और कन्या राशि होने पर अधिक व्यवसायी बनते हैं। इसका अर्थ यह भी भी है कि दशम भाव में मिथुन या मीन राशि और एकादश भाव में मेष या कर्क राशि में अधिक व्यवसायी होते हैं। इसके अतिरिक्त यह भी स्पष्ट होता है कि लग्न में कर्क, वृश्चिक और धनु राशि में व्यवसायी बनने की दर बहुत कम होती है।

- लग्न या किसी भी भाव में चर राशि होने का व्यवसायी बनने में कोई स्पष्ट योगदान नहीं है।
- सूर्य का किसी भी राशि-स्थिति का व्यवसायी बनने में योगदान नहीं है।
- चन्द्र की वृश्चिक राशि-स्थिति में अधिक व्यवसायी बने जबकि सिंह में यह दर वृश्चिक से कुछ कम है।
- मंगल और बुध की किसी भी राशि-स्थिति में व्यवसायी बनने का स्पष्ट योग नहीं है।
- बृहस्पति की वृष और मिथुन राशि-स्थिति में स्पष्ट रूप से अधिक व्यवसायी बनते हैं। इसके अतिरिक्त बृहस्पति की कुम्भ और मीन राशि-स्थिति में भी व्यवसायी बनने के दर औसत से अधिक होती है। बृहस्पति की कर्क, सिंह, तुला और वृश्चिक राशि-स्थिति में बहुत कम व्यवसायी बनते हैं।
- शुक्र की मिथुन राशि-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं।
- शनि की किसी भी राशि-स्थिति में व्यवसायी बनने का कोई स्पष्ट योग नहीं है, किन्तु शनि की वृष, मिथुन और कर्क राशि-स्थिति में नौकरीपेशा की अपेक्षा अधिक व्यवसायी बनते हैं।
- राहु की तुला और वृश्चिक राशि-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं। केतु राहु से सदैव सम-सप्तक होता है इसीलिए केतु की मेष और वृष राशि-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं।

भाव-स्थिति के आधार पर

- सूर्य की सप्तम भाव-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं। सप्तमस्थ सूर्य की प्रथम भाव पर दृष्टि होती है, परन्तु व्यवसायी बनने में दृष्टि का प्रभाव इस शोध-आकलन में सिद्ध नहीं हुआ।
- चन्द्र की दशम और द्वादश भाव-स्थितियों में अधिक व्यवसायी बनते हैं। इसके अतिरिक्त द्वितीय भाव-स्थिति में भी नौकरीपेशा से अधिक व्यवसायी बनते हैं। यहाँ भी चन्द्र की दृष्टि का व्यवसायी बनने में योगदान सिद्ध नहीं हुआ।
- मंगल की दशम भाव-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं।
- बुध की द्वादश भाव-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं।
- बृहस्पति की चतुर्थ भाव-स्थिति में स्पष्ट रूप से अधिक व्यवसायी बनते हैं और षष्ठ, सप्तम और दशम भाव-स्थिति में नौकरीपेशा की अपेक्षा अधिक व्यवसायी बनते हैं। यहाँ बृहस्पति की पंचम और नवम दृष्टि का विशेष प्रभाव नहीं है।
- शुक्र की स्थिति यदि लग्न में हो तो अधिक व्यवसायी बनते हैं।
- शनि की एकादश और द्वादश भाव-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं।
- राहु की द्वादश भाव-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं। इसका अर्थ यह भी है कि केतु की षष्टम भाव स्थिति में अधिक बनते हैं।

ग्रहों की परस्पर स्थिति पर आधारित

सूर्य से और शुक्र से अन्य ग्रह

- सूर्य-चन्द्र की 9/5 और 11/3 भाव-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं। सूर्य-चन्द्र की युति और सम-सप्तक स्थिति का व्यवसायी बनने में कोई योगदान सिद्ध नहीं हुआ। सूर्य-मंगल, सूर्य-बुध, सूर्य-शुक्र और सूर्य-शनि की भाव-स्थिति से व्यवसायी बनने का कोई स्पष्ट योग निर्मित नहीं होता। सूर्य-बृहस्पति की 3/11 भाव-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं। सूर्य-राहु की 10/4, 11/3 और 12/2 भाव-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं। केतु का ग्राफ नहीं दिया गया है, परन्तु केतु की स्थिति राहु से सदैव सप्तक होती है इसीलिए सूर्य से केतु की 4/10, 3/11 और 2/12 भाव-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं।

चन्द्र और बृहस्पति से विभिन्न ग्रह

- चन्द्र-मंगल की युति, 2/12 और 4/10 स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते है। चन्द्र-बुध 3/11, 6/8 और 10/8 स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं। चन्द्र-बृहस्पति 2/12 और 8/6 स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं। चन्द्र-शुक्र की 2/12, 6/8 और सम-सप्तक स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं। चन्द्र-शनि की 5/9 और सम-सप्तक स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं जबकि 10/4 स्थिति में सबसे अधिक नौकरीपेशा होते हैं। चन्द्र-राहु की 4/10 और 8/6 स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं।
- बृहस्पति-शुक्र की 11/3 स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं। बृहस्पति-शनि की परस्पर भाव-स्थिति से कोई स्पष्ट योग नहीं बनता, किन्तु 3/11 और 5/9 स्थिति में नौकरीपेशा की अपेक्षा व्यवसायी होने की सम्भावना अधिक होती है। बृहस्पति-राहु की 10/4 स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं।

मंगल और बुध से विभिन्न ग्रह

- मंगल-बुध, मंगल-शुक्र और मंगल-शनि की परस्पर भाव-स्थिति से व्यवसायी बनने का कोई स्पष्ट योग निर्मित नहीं हुआ। मंगल बृहस्पति की युति, 3/11

और 2/12 भाव-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं। मंगल-राहु की 8/6 में अधिक व्यवसायी बनते हैं।।

- बुध-शुक्र और बुध-राहु की परस्पर भाव स्थिति से कोई योग निर्मित नहीं होता। बुध-शनि की 4/10 भाव-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं।

शनि से राहु

- शनि-राहु की 3/11 और 6/8 भाव-स्थिति में नौकरीपेशा की अपेक्षा अधिक व्यवसायी बनते हैं।

नक्षत्रों पर आधारित

- लग्न की अश्लेषा और शतभिषा नक्षत्र-स्थिति में व्यवसायी बनने की दर अधिक होती है।
- सूर्य की अश्लेषा और उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र-स्थिति में सबसे अधिक व्यवसायी बनते हैं।
- चन्द्र की मृगशिरा, मघा, ज्येष्ठा, उत्तर-आषाढा और श्रवण नक्षत्र-स्थिति में अधिक व्यवसायी बनते हैं।
- मंगल की मृगशिरा नक्षत्र-स्थिति में सबसे अधिक व्यवसायी बनते हैं और भरणी, चित्रा, अनुराधा और पूर्व-भाद्रपद में भी व्यवसायी बनने की दर अधिक है।
- बुध की अश्लेषा नक्षत्र-स्थिति में सबसे अधिक व्यवसायी बनते हैं और अश्विनी, पूर्व-आषाढा, उत्तर-आषाढा और धनिष्ठा में भी व्यवसायी बनने की अधिक है।
- बृहस्पति की कृतिका और मृगशिरा नक्षत्र-स्थिति में व्यवसायी बनते हैं।
- शुक्र की रोहिणी, आद्रा और उत्तर-भाद्रपद नक्षत्र-स्थिति में व्यवसायी बनते हैं।
- शनि की कोई नक्षत्र-स्थिति व्यवसायी बनने में विशेष योगदान नहीं देती।

इस शोध में प्रमेयों का आकलन व्यापकता से किया गया है जिससे पूर्व-निर्धारित प्रमेयों की सिद्धता-परखने के साथ-साथ नवीन सूत्र प्राप्त होने की सम्भावना भी रहे।

निष्कर्ष:

- एकादश या दशम भाव की अपेक्षा लग्न में बुध की मिथुन और कन्या राशि होने से व्यवसायी बनते है।
- ग्रहों की अपनी उच्च, नीच या स्वराशि में होने से सम्बन्धित व्यवसायी बनने के अधिकतर पूर्व-निर्धारित योग सिद्ध नहीं हुए बल्कि चन्द्र के नीच राशिस्थ (वृश्चिक राशि में) होने पर सर्वाधिक व्यवसायी बने। इसके अतिरिक्त बृहस्पति के भी शत्रु राशियों वृष और मिथुन में होने पर अधिक व्यवसायी होते है, हालाँकि बृहस्पति के अपनी राशि मीन में होने पर भी व्यवसायी बने।
- व्यवसायी बनने में ग्रहों की दृष्टि की अपेक्षा स्थिति अधिक महत्त्वपूर्ण होती है।
- दशम भाव में बुध की अतिरिक्त अन्य किसी ग्रह का व्यवसायी बनने में योगदान नहीं सिद्ध हुआ बल्कि ग्रहों की परस्पर स्थिति से कुछ नए सूत्र प्राप्त हुए।
- चन्द्र-बुध, चन्द्र-शुक्र और मंगल-बुध की युतियों का पूर्व-निर्धारित सूत्र सिद्ध नहीं हुआ और चन्द्र-मंगल और मंगल-बृहस्पति की युति का व्यवसायी बनने का नवीन सूत्र मिला।
- नक्षत्र के आधार पर सभी परिणाम नवीन हैं।

सन्दर्भ-सूची

[1] शर्मा, ल. न. (2013). ज्योतिष प्रदीप. नई दिल्ली : यूनिकॉर्न बुक्स।

[2] वर्मा, कल्याण. (2013). सारावली. (म. चतुर्वेदी, टीकाकार). नई दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास।

[3] पराशर. (2000). बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् (सीताराम झा, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेश : मास्टर खिलाड़ी लाल संकटा प्रसाद।

[4] जैमिनी. (2014). जैमिनी सूत्रम. (सुरेश चन्द्र मिश्र, टीकाकार). नई दिल्ली : रंजन पब्लिकेशन्स।

[5] वराहमिहिर. (2014). बृहज्जातकम्. (सुरेश चन्द्र मिश्र, टीकाकार). नई दिल्ली : रंजन पब्लिकेशन्स।

[6] मानसागर. (2008). मानसागरी. (सीताराम झा, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेश : ठाकुर प्रसाद पुस्तक भंडार।

[7] मन्त्रेश्वर. (2010). फलदीपिका. (गोपेश कुमार ओझा, टीकाकार). नई दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास।

[8] वेंकटेश. (2004). सर्वार्थ चिंतामणि. (गुरु प्रसाद गौर, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेश : चौखम्बा सुभारती प्रकाशन।

[9] वैधनाथ. (2014). जातक पारिजात. (सुरेश चन्द्र मिश्र, टीकाकार). नई दिल्ली : रंजन पब्लिकेशन्स।

[10] ढुण्ढिराज. (2008). जातकाभरणम. (सीताराम झा टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेश : ठाकुर प्रसाद पुस्तक भंडार।

[11] पाठक, महादेव. (2014). जातकतत्त्वम. (हरिशंकर पाठक, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेश : चौखम्बा सुभारती प्रकाशन।

[12] गौर, ऐ. के. कर्नल. (2011). ज्योतिष और आजीविका. नई दिल्ली : वाणी पब्लिकेशन्स।

[13] कुमार, कृ. (2005). आजीविका विचार. नई दिल्ली : अल्फा पब्लिकेशन्स।